45

हे प्रभु, हमारी आंखें खोल दे

(14:1-5)

अराम का राजा[1] एलीशा से परेशान था, क्योंकि इस नबी को इस्राएल के विरुद्ध उसकी हर चाल का पहले से पता चल जाता था। इसलिए राजा ने एलीशा को ढूंढ़ने के लिए ''घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा और उन्होंने रात को आकर नगर को घेर लिया'' जहां एलीशा रहता था (2 राजा 6:14)। अगली भोर एलीशा के टहलुए ने बाहर निकलकर देखा कि ''घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए है।'' वह भागकर अन्दर आया और पुकारता हुआ कहने लगा, ''हाय! ... हम क्या करें?'' (आयत 15)।

नबी ने उत्तर दिया, ''मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वे उनसे अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं'' (आयत 16)। कोई संदेह नहीं कि वह सेवक घबरा गया था। शत्रु सैकड़ों की संख्या में थे और वे केवल दो जन थे! तब एलीशा ने प्रार्थना की, ''हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके।'' तुरन्त उस सेवक की आंखें खुल गईं और ''उसने देखा कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है'' (आयत 17)।

प्रकाशितवाक्य 12 और 13 में हमारा परिचय अपवित्र त्रिएकता अर्थात अजगर, पशु और झूठे नबी से कराया जाता है। यूहन्ना ने उनकी सामर्थ और प्रभाव की एक स्पष्ट परन्तु भयभीत करने वाली तस्वीर बनाई। उसने जोर दिया कि ''सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे-पीछे अचम्भा करते हुए चले'' (13:3ख)। उसने भीड़ का अलाप लिखा कि ''इस पशु के समान कौन है? कौन इससे लड़ सकता है?'' (आयत 4ख)। उसने लिखा कि पशु को ''यह अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए'' (आयत 7क)। दबे हुए मसीही लोगों की पुकार सुने बिना, पूरी पृथ्वी में फैले शहीदों का लहू देखे बिना, अध्याय 13 को पढ़ना कठिन होगा।

यदि मैं यूहन्ना के समय में होता, तो मैं एलीशा के सेवक की तरह ही होता, जिसे केवल शत्रु की दिखाई देने वाली असीमित शक्ति नजर आई थी। मैं अपने यह पुकारने की कल्पना कर सकता हूं, ''हाय! हम क्या करें?'' मुझे उसी समझ की आवश्यकता होती जो एलीशा ने अपने सेवक को दी थी: ''मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वे उनसे अधिक

हैं, जो उनकी ओर हैं।'' प्रकाशितवाक्य 14 का उद्देश्य यूहन्ना के पाठकों को वही नज़रिया देना था।

आज अध्याय 14 के संदेश की आवश्यकता है। जब अपने आस-पास की बुराई को देखकर हम घबरा जाते हैं तो हमें परमेश्वर के प्रबन्ध के ईश्वरीय संसाधनों को देखने के लिए आंखें खोलने की आवश्यकता होती है। आज भी हमें यह समझने की आवश्यकता है कि ''जो हमारी ओर हैं, वे उनसे अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।''

अध्याय 14 स्वाभाविक रूप से तीन भागों में बंट जाता है,[2] जिसके प्रत्येक भाग का आरम्भ ''और मैंने दृष्टि की'' या इससे मेल खाते शब्दों से होता है।[3] यूहन्ना अपने पाठकों को वही दिखाना चाहता था, जो उसने स्वयं देखा। वह चाहता था कि प्रभु उनकी आंखें खोल दे कि परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए क्या रखा है और यह भी कि उनके सताने वालों के लिए क्या रखा है। इस प्रस्तुति में, हम पहले भाग का अध्ययन करेंगे। दूसरे दो भागों को हम इससे अगले पाठों में देखेंगे।[4]

''हे प्रभु, हमारी आंखें खोल दे कि हम विजय को देख सकें'' (14:1)

जैसा कि अध्याय 13 में दिखाया गया है कि पृथ्वी पर पशु के नियन्त्रण से अजगर अवश्य गर्वित हो रहा होगा। पृथ्वी पर अन्धकार का शासन था और लोगों के मन बुराई से भर गए थे। जनसमूह पशु की हर आज्ञा मानते हुए पृथ्वी में दिमाग रहित रोबोटों[5] की तरह घूम रहा था। परन्तु अध्याय 14 के आरम्भ में ऐसा लगा, जैसे अचानक घाटी के आस-पास पहाड़ों की चोटियों पर स्वर्गीय प्रकाश चमका हो। अन्धकार के ऊपर मेमना अपने लोगों के साथ विजयी था! ''फिर मैंने दृष्टि की, और देखो,[6] वह मेमना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चौवालीस हज़ार जन हैं, जिनके माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है'' (आयत 1क)। (सिय्योन पर्वत पर 1,44,000 के साथ खड़ा मेमना का चित्र देख)।

प्रकाशितवाक्य के आरम्भ में हमने इस दृश्य के नायकों से भेंट की थी। नि:संदेह मेमना यीशु मसीह ही है। अध्याय 5 में उसे मेमने के रूप में दिखाया गया था, जो सात मुहरों वाली पत्री खोलने के योग्य था। अध्याय 7 के अन्तिम भाग में मेमने और सिंहासन के सामने खड़ी लोगों की बड़ी भीड़ महिमा के गीत गा रही थी। 6, 12 और 13 अध्यायों में भी मेमने का उल्लेख है।

1,44,000 को हम अध्याय 7 के पहले भाग में मिले थे और हमने सुझाव दिया था कि ये परमेश्वर के लोगों के प्रतिनिधि थे।[7] उनके माथों पर मुहरें लगी थीं, जो इस बात का संकेत था कि विनाश की आंधी चलने पर उनकी रक्षा की जाएगी। 14:1 में हमने उन्हें सिय्योन पहाड़ पर यीशु के साथ विजयी खड़े देखा था। अध्याय 14 में ''1,44,000''[8] सांकेतिक अंक का दोहराया जाना इस बात पर ज़ोर देता है कि अध्याय 13 वाले दोनों पशु चाहे जितने भी शक्तिशाली दिखाई दें,परन्तु विजय यीशु के साथ *सभी* विश्वासियों की

होगी। एक का भी नाश नहीं होगा!

अध्याय 7 में 1,44,000 के माथों पर *मुहर* थी; अध्याय 14 में उनके माथे पर मेमने ''और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है'' (आयत 1ख)। मुहर और नाम दो अलग-अलग चीज़ों को नहीं दिखाता, बल्कि एक ही चीज़ के दो पहलुओं को दिखाता है, जहां मुहर रक्षा पर ज़ोर देती है, जबकि नाम स्वामित्व पर। अध्याय 3 में यीशु ने ''जय पाने वाले'' हर व्यक्ति से प्रतिज्ञा की थी: ''मैं अपने परमेश्वर का नाम ... और अपना नया नाम उस पर लिखूंगा'' (आयत 12)। अध्याय 14 उस प्रतिज्ञा के पूरा होने को दिखाता है। परमेश्वर जब कोई प्रतिज्ञा करता है तो आप उस पर भरोसा कर सकते हैं।

14:1-5 में पहले हम उन नायकों को मिले हो सकते हैं, परन्तु दृश्य नया है: वे ''सिय्योन पहाड़ पर खड़े'' थे। प्रकाशितवाक्य में से गुज़रते हुए हमने पुराने नियम के जानकार लोगों के लिए विशेष महत्व वाले कई चिह्न देखे हैं। पुराने नियम की कोई आकृति सिय्योन पहाड़ की आकृति से बढ़कर गर्भवती नहीं थी।

सिय्योन पूरे इस्राएल पर दाऊद के राजा बनने के बाद उसके द्वारा कब्ज़ा किए गए यरूशलेम का उत्तर-पूर्वी भाग था।[9] बाद में इसे दाऊद द्वारा मन्दिर बनाने के लिए चुन लिया गया था। यहूदी दिमाग में सिय्योन पहाड़ संसार का सबसे पवित्र स्थान था, जहां परमेश्वर अपने लोगों से मिलता था।[10] पुराने नियम के बाद के लेखों में सिय्योन आशा का प्रतीक बन गया। उद्धार सिय्योन से निकलना था (भजन संहिता 14:7)। छुटकारा दिलाने वाले का सम्बन्ध सिय्योन से होना था (यशायाह 59:20)।[11]

नये नियम के लेखकों ने उन्हीं संकेतों को उठाया। भजन संहिता 2 में कहा गया था कि परमेश्वर मसीहा को ''पवित्र पर्वत सिय्योन'' पर मुकुट पहनाएगा (आयत 6)। नये नियम में परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों द्वारा यीशु के मुर्दों में से जी उठने और परमेश्वर के दाहिने हाथ उठाए जाने पर भजन संहिता 2 का पूरा होना कहा गया था (प्रेरितों 13:32-37)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों को बताया कि वे डोल जाने वाले सिय्योन पहाड़ के पास नहीं आए बल्कि:

> ... तुम *सिय्योन के पहाड़* के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और अब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं के पास आए हो (इब्रानियों 12:22, 23)।[12]

इन आयतों में ध्यान दें कि ''सिय्योन पहाड़'' को ''स्वर्गीय यरूशलेम'' से जोड़ा गया है। प्रकाशितवाक्य में पहले यीशु ने ''अपने परमेश्वर के नगर अर्थात नये यरूशलेम ... जो परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरने वाला है'' की बात की थी (3:12)। अध्याय 21 में हम उस ''पवित्र नगर नये यरूशलेम'' के बारे में पढ़ते हैं। (देखें आयतें 2 और 10.)

यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि अध्याय 14 वाला सिय्योन ''पृथ्वी पर की कोई जगह नहीं,'' बल्कि ''आत्मिक वास्तविकता'' है:[13] यहीं पर परमेश्वर अपने लोगों के साथ

होगा। यह विजय का स्थान था!

टीकाकार इस बात पर अलग-अलग हो जाते हैं कि दर्शन वाला ''सिय्योन पहाड़'' पृथ्वी पर है या स्वर्ग में।[14] इसके अलावा, यदि यह स्वर्ग में है तो यह प्रश्न रह जाता है कि यह यूहन्ना के समय के विश्वासी मसीहियों को दर्शाता है[15] या अनन्तकाल तक स्वर्ग की आशिषों का आनन्द लेने वाले *सभी* विश्वासी मसीहियों को। मेरा मानना है कि यह स्वर्ग में सभी छुड़ाए हुओं का दृश्य है। अध्याय 7 का अध्ययन करते हुए हमने पहले उद्धार पाए हुओं को पृथ्वी पर 1,44,000 के रूप में और फिर मेमने और सिंहासन के सामने स्वर्ग में अनगिनत भीड़ के रूप में देखा था। ये 1,44,000 मेमने और सिंहासन के सामने हैं, सो मुख्यतया यह दृश्य अध्याय 7 वाली बड़ी भीड़ का ही लगता है।[16] परन्तु दर्शन का महत्व ''कब'' या ''कहां'' में नहीं, बल्कि ''क्या'' में है यानी यह कि 1,44,000 लोग विजयी हुए थे! पवित्र आत्मा यूहन्ना के पाठकों से कह रहा था, ''पशु से मत डरो! विश्वासी रहे तो विजय तुम्हारी ही होगी!''

क्या हम अपनी आंखें बन्द करके इस महान सच्चाई को देखते हैं? मुझे मालूम है कि मैं देखता हूं, और अपने कुछ भाइयों और बहनों की घबराहट को देखकर मुझे लगता है कि दूसरे भी इसे देखते हैं। हमें ऐसे वचनों को याद रखने की बड़ी आवश्यकता है:[17]

> हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और विभव, तेरा ही है; ... (1 इतिहास 29:11)।
>
> ... जय यहोवा ही से मिलती है (नीतिवचन 21:31)।
>
> ... परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है (1 कुरिन्थियों 15:57)।

''हे प्रभु, हमारी आंखें खोल दे कि हम विजय को देख सकें!''

''हे प्रभु, हमारी आंखें खोल दे कि हम महिमा के महत्व को समझ सकें'' (14:2,3)

सिय्योन पहाड़ पर 1,44,000 लोग क्या कर रहे थे? क्या वे उन परेशानियों को गिन रहे थे, जो उन्होंने सही थीं? यह निर्धारित करने की प्रतियोगिता कर रहे थे कि किसने अधिक सहा था? नहीं, वे विजय का गीत गाते हुए जश्न मना रहे थे। यूहन्ना ने लिखा है, ''और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैंने सुना; वह ऐसा था, मानो वीणा बजाने वाले वीणा बजाते हों'' (आयत 2)।

यूहन्ना को एक ज़बर्दस्त गीत सुनाई दिया,[18] जो इतना शक्तिशाली था कि इसकी तुलना लहरों के शोर या गरज से की जा सकती थी, और यह इतना मधुर था कि इसे निपुण वीणा-वादकों के मधुर संगीत से मिलाया जा सकता था। प्रेरित ने पानी या गरज या वीणा

की आवाज़ नहीं सुनी थी; यह तो उस शानदार गीत का विवरण देती उपमाएं थीं।[19] कई सौ गायकों के कोरसों की सामर्थ और सुन्दरता से मैं भयभीत हो जाता हूं। क्या आप 1,44,000 लोगों की आवाज़ के एक साथ मिलकर महिमा गाने की कल्पना कर सकते हैं?

उनकी प्रस्तुति के ''श्रोता'' थे, ''सिंहासन ... और चारों प्राणी और प्राचीन''[20] (आयत 3क)। हम अध्याय 4 वाले सिंहासन के दृश्य में लौट आए हैं और एक बार फिर पिता की उपस्थिति में हैं।[21]

1,44,000[22] द्वारा गाया जाने वाला गीत ''एक नया गीत'' (आयत 3ख) था। ''नया गीत'' शब्द का इस्तेमाल पुराने नियम में परमेश्वर की महिमा के लिए (भजन संहिता 33:3; 96:1; 149:1) और विशेषकर छुटकारे और विजय के लिए महिमा करने (भजन संहिता 40:1-3; 144:9-11) के लिए अक्सर हुआ है। उदाहरण के लिए भजन संहिता 98:1 देखें, जहां दाऊद ने लिखा, ''यहोवा के लिए एक नया गीत गाओ, क्योंकि उसने आश्चर्यकर्म किए हैं! उसके दाहिने हाथ और पवित्र भुजा ने उसके लिए उद्धार किया है।'' प्रत्येक गीत ''नया'' था, क्योंकि हर विजय निराली थी।

अध्याय 5 का अध्ययन करते हुए हमने चार प्राणियों और चौबीस प्राचीनों को मेमने की महिमा का ''नया गीत'' गाते सुना था, जिसके बोल थे: ''तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया; ...'' (आयतें 9, 10)।[23] मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि 1,44,000 द्वारा गाए जाने वाले ''नये गीत'' का विषय वही था।[24] उन्होंने ''मेमने के लहू'' के द्वारा विजय पाई थी (12:11)!

अध्याय 14 वाले ''नया गीत'' के बोल नहीं बताए गए हैं, परन्तु इतना बताया गया है कि ''उन एक लाख चौआलीस हज़ार जनों को छोड़ ... कोई भी वह गीत न सीख सकता था'' (आयत 3ग)। विजय पाने वालों के अलावा कोई विजय के उस गीत को ''सीख'' नहीं सकता था। जैसा कि डेनियल रस्सल ने कहा है, ''अभिव्यक्ति से पहले अनुभव होना आवश्यक है।''[25] मायर पर्लमैन ने इस विचार को विस्तार दिया: ''सच्चाई को व्यक्त करने से पहले हमें इसका अनुभव होना आवश्यक है।''[26]

कभी-कभी मैं संगीत के कार्यक्रमों में जाता हूं जहां प्रतिभावान बच्चे बड़े-बड़े कलाकारों के गाए गीतों को गाने की नकल करते हैं। वे उन गायकों की आवाज़ की और कई बार उनकी हरकतों की नकल करते हैं। मुझे जो बात हैरान करती है वह यह है कि ये गीत आमतौर पर आशिकी, दिल टूटने और विरह के होते हैं। मुझे ये कार्यक्रम अच्छे लगते हैं, परन्तु यह साफ़ है कि उन बच्चों को इस बात का कोई ध्यान नहीं है कि वे क्या गा रहे हैं। उन्होंने शब्द और सुर सीख लिए हो सकते हैं, परन्तु उन्होंने *गीतों को* नहीं *सीखा* है। जब तक वे गीतों में व्यक्त भावनाओं का *अनुभव* नहीं करते तब तक उन्हें वे गीत नहीं आ सकते।

1,44,000 ''पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे''[27] (आयत 3घ)। उन्हें यीशु के लहू द्वारा उद्धार मिला था। वे बड़ी विपदा से बच निकले थे। वे मेमने के साथ जयवन्त खड़े थे। उन्हें *मालूम था* कि विजय क्या होती है। किसी और को नहीं। इस कारण किसी और को उनका

''नया गीत'' नहीं आ सकता था।

2 और 3 आयतों से आगे बढ़ने से पहले यह समझ लेना आवश्यक है कि 1,44,000 लोग परमेश्वर की महिमा गाते हुए अपनी विजय का जश्न मना रहे थे। कुछ लोगों को लगता है कि आराधना समय की बर्बादी है, परन्तु 1,44,000 को ऐसा नहीं लगा था। उनका धन्यवाद गीत के पंखों पर सवार होकर परमेश्वर की उपस्थिति में जा रहा था। ''हमें एक यूनानी माता के बारे में बताया गया है, जिसने अपने बच्चे को ढलान के सिरे पर देखा। शोर मचाने से [बच्चा] चौंक जाता है, जिससे [वह] लुढ़क कर नीचे गिर सकता था। उस स्त्री ने एक प्रसिद्ध गीत में अपनी आवाज़ उठाते हुए बच्चे को अपने पास लाने के लिए उसे अपनी ओर आकर्षित किया।''[28] महिमा के गीत स्वाभाविक रूप से हमें उसके निकट लाते हैं, जिसने हमें बनाया है। स्तुति हमारे मनों को ऊपर उठाकर हमें सामर्थ देती है।

''हे प्रभु, हमारी आंखें खोल दे कि हम महिमा के महत्व को समझ पाएं।''

''हे प्रभु, चरित्र के महत्व को समझने के लिए हमारी आंखें खोल दे'' (14:4, 5)

एक बार मैं कॉलेज के गीत के लिए किसी ऑडिशन में था। छात्र हाथों में गाने के पर्चे लिए हुए आए। कई तो अपने साथ साज़ भी लाए थे। उनमें से अधिकतर एकांत जगह ढूंढ़ने का प्रयास कर रहे थे, जहां वे ऑडिशन में अपनी बारी आने से पहले आवाज़ का अभ्यास कर सकें। अन्त में गीत के लिए केवल संगीत का ज्ञान रखने वालों तथा कुछ स्तर तक संगीत में कुशल छात्रों का चयन किया गया। परन्तु अध्याय 14 वाली शानदार गायक मण्डली के सम्बन्ध में प्रश्न यह नहीं था कि ''क्या आप गा सकते हैं?'' या ''आपने संगीत का प्रशिक्षण कहां लिया है?'' बल्कि यह था कि ''आप व्यक्ति कैसे हैं?'' यूहन्ना ने कहा:

> ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे हैं: ये वे ही हैं, कि जहां कहीं मेमना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं; ये तो परमेश्वर के निमित्त पहिले फल होने के लिए मनुष्यों में से मोल लिए गए हैं। और उनके मुंह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं (आयतें 4, 5)।

कइयों ने 1,44,000 की संख्या वैसे ही बनाने का प्रयास किया है।[29] उदाहरण के लिए कुछ लोग कहते हैं कि 1,44,000 ही वे आत्मिक लोग हैं, जो स्वर्ग में जाएंगे। उनके कहने के अनुसार शेष विश्वासी नई पृथ्वी से संतुष्ट हो जाएंगे। यदि वे ''1,44,000'' का अर्थ अक्षरश: लेते हैं तो अपनी बात में बने रहने के लिए शेष संकेत को भी ऐसे ही मानना चाहिए। अध्याय 7 के अनुसार सभी 1,44,000 लोग यहूदी हैं और अध्याय 14 के अनुसार, सभी 1,44,000 लोग कुंआरे पुरुष हैं, जिन्होंने कभी किसी स्त्री से शारीरिक सम्बन्ध नहीं बनाया, यानी वे 1,44,000 यहूदी कुंआरे हैं! योग्यता की ये शर्तें लगभग हर उस व्यक्ति को इनमें से निकाल देती हैं, जिनमें उन गुटों के अगुवे भी हैं, जो यह कहते हैं कि इसका अर्थ

यही है।

4 और 5 आयतों का उद्देश्य सुपर-संतों का विवरण देना नहीं है, बल्कि इनका उद्देश्य तो उस पशु पर विजय पाने के लिए आवश्यक चरित्र की रूपरेखा देना है।

विश्वासी

पहला गुण इन शब्दों में व्यक्त किया गया है: ''ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंआरे हैं'' (आयत 4क)। मूल यूनानी में इस वाक्य का अन्तिम भाग मूलत: इस प्रकार पढ़ा जाता है, ''क्योंकि वे कुंआरे हैं'' (देखें KJV)।

आश्चर्य की बात है कि कई टीकाकार इस बात से संतुष्ट होकर कि यूहन्ना ने विवाहित स्थिति से अविवाहित स्थिति को अधिक भक्तिपूर्ण माना, यूहन्ना के शब्दों का अर्थ अक्षरश: लेते हैं।[30] यह विश्वास बाद में उठा,[31] परन्तु आरम्भिक कलीसिया में नहीं था। बाइबल के आरम्भ से लेकर अन्त तक, विवाह को पवित्र और आशीषित माना गया है। आदम जब कुंआरा था तो परमेश्वर ने कहा था, ''आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊंगा, जो उससे मेल खाए'' (उत्पत्ति 2:18)। पौलुस ने यीशु से कलीसिया के सम्बन्ध की तुलना पत्नी के अपने पति के साथ सम्बन्ध से की (इफिसियों 5:22-33)।[32] प्रभु की कलीसिया के अगुवे विवाहित पुरुष होने चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:6)।[33] इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''विवाह सब में आदर की बात समझी जाए'' (इब्रानियों 13:4क)।[34]

संदर्भ में लेने पर आयत 4 के आरम्भिक शब्द मुख्यतया *आत्मिक* शुद्धता की बात करते हैं। पुराने नियम में, इस्राएल को परमेश्वर की दुल्हन के रूप में[35] दिखाया गया था और उसकी बेवफाई को व्यभिचार कहा गया था। (देखें यिर्मयाह 3:6; होशे 4:12.) कलीसिया के सम्बन्ध में नये नियम में इसी रूपक का इस्तेमाल हुआ है। पौलुस ने कलीसिया के लोगों को बताया, ''क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंआरी की नाईं मसीह को सौंप दूं'' (2 कुरिन्थियों 11:2)।[36] याकूब ने बेवफा या अविश्वासी मसीही लोगों को ''व्यभिचारणियों'' कहकर बुलाया (याकूब 4:4)। इस अध्याय में जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं, शैतान के बहकावे में दब जाने को ''व्यभिचार'' कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 14:8)।[37]

कुछ लेखक हैरान होते हैं कि 14:4 का रूपक अपने आप को शुद्ध रखने वाले *पुरुषों* का क्यों है, जबकि आमतौर पर कलीसिया को स्त्रीलिंग के रूप में बताया गया है (1 कुरिन्थियों और इफिसियों में मसीह की दुल्हन; प्रकाशितवाक्य 12 वाली स्त्री)।[38] इसका उत्तर आयत 8 में मिलता है, जिसमें बड़े बाबुल नगर की बात है। अध्याय 17 में बाबुल को वेश्या के रूप में दिखाया गया है, और वेश्या का उद्देश्य *पुरुषों* से दुष्कर्म करना होता है। प्रकाशितवाक्य 14:4 इस बात पर जोर दे रहा है कि 1,44,000 ने वेश्या की पुकार को अनसुना कर दिया। साफ शब्दों में कहें तो उन्होंने कैसर की मूर्ति के आगे घुटने नहीं

टेके। वे अपने प्रभु के वफ़ादार रहे!

कुछ पल पहले मैंने कहा था कि आयत 4 के आरम्भिक शब्द *मुख्यतया* आत्मिक शुद्धता के बारे में हैं। मूर्तिपूजा के साथ जुड़ी अनैतिकता को ध्यान में रखते हुए, यदि कोई मसीही सम्राट की पूजा में भाग लेकर आत्मिक व्यभिचार करता तो समझो कि उसने शारीरिक व्यभिचार भी कर लिया।[39] आयत 4 इस बात पर ज़ोर देती है कि जयवन्त होने वाले *हर* प्रकार से प्रभु के वफ़ादार थे। केवल ''शुद्ध मन [और जीवन] वाले ही परमेश्वर को देखेंगे।'' (देखें मत्ती 5:8.)

पीछे चलने वाले

आयत 4 के पहले भाग में विजय पाने की नकारात्मक योग्यता दी गई है कि 1,44,000 ने अपने आप को कुछ व्यवहारों से दूर रखा था। आयत का अगला भाग सकारात्मक शर्त देता है: ''ये वे ही हैं, कि जहां कहीं मेमना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं'' (आयत 4ख)।

प्राचीन इफिसुस में जाने पर, हमारे यात्री दल को नगर के बीचों-बीच व्यभिचार के अड्डे के खण्डहर दिखाए गए थे। सौ या इससे अधिक गज दूर एक वेश्या ने संगमरमर के मार्ग पर अपने चकले की ओर इशारा करते कदमों के चिह्न उकेरे हुए थे। पदचिह्नों के अलावा पत्थर में छैनी से ''मेरे पीछे-पीछे आओ'' भी लिखा हुआ था। 14:4 के पहले भाग में ज़ोर दिया गया है कि जयवन्त होने वाले ''बड़ी वेश्या'' के पीछे *नहीं* लगे थे (17:1); और अब हमें बताया गया है कि वे यीशु के पीछे *चले*।

यीशु ने ''मेरे पीछे आओ'' से बढ़कर कभी कोई मांग नहीं की।[40] यीशु के पीछे चलने के लिए अतीत से सम्बन्ध तोड़कर हर बात में उसे पहल देना शामिल है। यीशु आज भी कहता है, ''जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इनकार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले'' (मरकुस 8:34; देखें आयतें 35-37)। 1,44,000 यीशु की चुनौती को मानकर *जहां भी* वह गया, उसके पीछे हो लिए थे, चाहे वह दुख उठाने के लिए हो या मरने के लिए।

मैं एक विरोध की कल्पना करता हूं: ''पर निश्चय ही प्रभु हमसे ऐसे समर्पण की अपेक्षा नहीं करता।'' क्या आप यकीन से कह सकते हैं? पतरस ने लिखा है, ''और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए *दुख उठाकर,* तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो'' (1 पतरस 2:21)।

> बैल्जियन कांगो में एक मिशन स्थल पर एक शाम एक स्थानीय नया बना मसीही प्रार्थना करने लगा, ''हे प्रभु यीशु, तू सूई है और मैं [धागा] हूं।'' मिशनरी को प्रार्थना की यह भाषा अजीब लगी, जिस कारण उसने उस आदमी से उसकी असामान्य बातों का अर्थ पूछ लिया। बात यह निकली कि वह स्थानीय व्यक्ति उस दिन मिशन स्कूल गया था और उसने लड़कियों को सिलाई करते देखा था, जहां उसे सबसे दिलचस्प बात यह लगी कि धागा सूई के पीछे ही चलता है। इसी प्रकार, जहां भी यीशु उसे ले जाए वह उसके पीछे चलना चाहता था।[41]

आराधना और सेवा कार्यों के लिए सेवकों की आवश्यकता है, यह मान लेना भी उचित है।
1,44,000 लोग सेवा के लिए बुलाए जाने का पुकार है, जबकि उनका काम नहीं बताया, किंतु
कारण उन्हें निश्चित पहचान पर विचार किया[42] एक उनके लिए काम का अनुमति दी गई हो!

पहला फल

1,44,000 "अनुग्रह से मोल लिये गये" (प्रका शितवाक्य 14:4) में से प्रत्येक के लिए
कहा गया है कि वे "परमेश्वर और मेम्ने के निमित्त पहले फल होने के लिए मनुष्यों में से मोल लिये
गये" (आयत 4ब) हैं, यानी उन्हें मनुष्यों के बीच में से छुड़ाया और खरीदा गया था (प्रेरितों
20:28; 1 कुरिन्थियों 6:19, 20; इफिसियों 1:7; 1 पतरस 1:18, 19)।

"पहला फल" एक ऐसी अभिव्यक्ति है, जिसका पुराने नियम का अध्ययन करने
वालों के लिए विशेष अर्थ है। पुराने नियम में, इस वाक्यांश का इस्तेमाल परमेश्वर के सामने
भेंट के रूप में लाई गई पहली उपज के लिए किया जाता था। इसका पहला फल हिलाया
निर्गमन 23:19 में लिखा है: "अपनी भूमि की पहली उपज का पहला भाग अपने
परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना।" परन्तु सामान्य अर्थ के साथ इस शब्द का इस्तेमाल
आत्मिक रूप से अन्य उपज के लिए किया जाता था।[43] इस अर्थ में इसे विश्वासी
इफिसियों (याकूब 1:18) और विश्वासी मसीहियों (रोमियों 8:23) के लिए इस्तेमाल
किया गया। पहली शताब्दी के मसीहियों को भी ऐसे इस्तेमाल किया जाता है, परन्तु
परमेश्वर ने उन्हें सबसे पहले अपने पवित्र लोगों के रूप में लिया था!

निर्दोषता

यहाँ आगे अपने पाठकों को यूहन्ना 1,44,000 विश्वासियों के बारे में कुछ कहता है जो आगे
आज्ञाकारिता की पवित्रता से मानी जाती है। यहाँ वह बताता है कि उसका वचन सम्पूर्ण रूप से
परमेश्वर के बारे में है: "और उनके मुँह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं"
(आयत 5)। NASB में इसका अनुवाद "निष्कलंक," KJV में "बिना दोष के"; RSV
में "कलंक"; CEV में "निरपराध" है। "उनके मुँह से ... झूठ नहीं निकला" था? वे
"निष्कलंक," "बिना दोष के," "कलंक," "निरपराध" हैं? यह सब वह ठहराया जा सकता है कि
परमेश्वर में पवित्र है, "क्योंकि उनके का कोई मतलब नहीं है, क्योंकि वह झूठ हो ही नहीं
सकते!"

"निष्कलंक" का अर्थ "झूठ" या "पाप रहित" नहीं है। यूहन्ना ने स्वयं कहा,
"यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं और हम में
सत्य नहीं" (1 यूहन्ना 1:8)। परमेश्वर की नज़र में "निष्कलंक" बनने वाले पाप
का क्षमा हो गए हैं, जो ईसाइ धर्म की भी बातों में है (1 यूहन्ना 1:7)। पौलुस के मसीही विश्वासी
को समझाया कि वे "परमेश्वर के निमित्त पहले फल होने के लिए मनुष्यों में से मोल लिये
गये, शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा [परमेश्वर
कर दिया, ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर [परमेश्वर

के सामने] उपस्थित करे'' (कुलुस्सियों 1:22)।

परन्तु इस शब्द का अर्थ यह नहीं है कि हम बेहतर से बेहतर करने की कोशिश करेंगे। यूनानी शब्द जिसका अनुवाद ''निष्कलंक'' हुआ है, उसके लिए इस्तेमाल होता था जो बलिदान के लिए योग्य हो।[44] (देखें लैव्यव्यवस्था 22:20.) पौलुस ने हम में से हर किसी को चुनौती दी है:

> इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, ... (रोमियों 12:1, 2)।

1,44,000 के निष्कलंक होने का उदाहरण यह है कि ''किसी के मुंह से झूठ नहीं निकला था।'' प्रभु वफ़ादारी की हमेशा कद्र करता है (भजन संहिता 32:2; यशायाह 53:9; सपन्याह 3:13; 1 पतरस 2:22; प्रकाशितवाक्य 22:15), परन्तु यूहन्ना के समय में झूठ बोलने की परीक्षा बहुत कठोर होगी: जब किसी मसीही से कैसर को ''प्रभु'' कहने को कहा जाता, तो यह कहना आसान होता होगा कि ''निश्चय ही, परमेश्वर मुझे मरने नहीं देना चाहता। मेरी पत्नी और बच्चे मुझ पर आश्रित हैं। यदि मैं इन रोमी अधिकारियों को चकमा देने के लिए इतना कह दूं तो भी मैं मसीही के रूप में रह सकता हूं, मसीही के रूप में आराधना कर सकता हूं, मसीही के रूप में सेवा कर सकता हूं। *निश्चय ही* परमेश्वर नहीं चाहता कि मैं मरूं।'' शायद इसी परीक्षा के कारण पवित्र आत्मा को कहना पड़ा, ''पर ...*सब* झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है'' (21:8)।[45] झूठ बोलने वाली जीभ विजय का गीत कभी नहीं गा सकती!

4 और 5 आयतों से उद्धार पाए हुओं के चरित्र का पता चलता है। वे हमें बताते हैं कि हमें कैसे मसीही बनना है। उम्मीद है कि इन आयतों से आपको निराशा नहीं बल्कि और बेहतर व्यक्ति बनने के लिए चुनौती मिली होगी।

> लंदन के ब्रिटिश संग्रहालय में अपोलो की एक मूर्ति है। अपोलो पौरुष का उत्कृष्ट नमूना है। वहां जाकर उस मूर्ति को देखते लोगों पर नजर रखी गई। ... इकट्ठे हुए और ढीले-ढाले लोग वहां प्रवेश करने पर तन कर चलने लगते हैं। शायद हमें यदि उसके सामने लाया जाए, जिसके जैसा हमें होना चाहिए, तो हम पहले से अधिक सीधे चलने लगेंगे।[46]

''हे प्रभु, चरित्र के महत्व को समझने के लिए हमारी आंखें खोल दे।''

सारांश

मैंने पहले कहा था कि अध्याय 14 के तीनों भागों का आरम्भ ''फिर मैंने दृष्टि की'' या ''फिर मैंने देखा'' शब्दों से होता है। इस अध्याय का अध्ययन करते हुए इस बात ने मुझे चौंका दिया कि यूहन्ना को हर दर्शन में *देखना* ही नहीं, बल्कि उसे *ऊपर* देखना पड़ा था।[47] पहले भाग में उसे सिय्योन पहाड़ की चोटी की ओर ऊपर देखना पड़ा था (आयत 1)। दूसरे भाग में उसे घोषणाएं करते हुए तीन स्वर्गदूतों को देखने के लिए आकाश की ओर देखना पड़ा था (आयत 6)। तीसरे भाग में, उसे बादल की ओर ऊपर को देखना पड़ा था, जिस पर मनुष्य का पुत्र बैठा था (आयत 14)। इसमें हमारे लिए कोई सबक हो सकता है: अपने आस-पास की बातों से घबरा जाने पर हमें अपनी आंखें ऊपर उठानी चाहिए कि हमारे ऊपर क्या हो रहा है। भजन लिखने वाले ने लिखा है:

> मैं अपनी आंखें पर्वतों की ओर लगाऊंगा। मुझे सहायता कहां से मिलेगी? मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है। वह तेरे पांव को टलने न देगा, तेरा रक्षक कभी न ऊंघे। ...
>
> यहोवा तेरा रक्षक है; यहोवा तेरी दहिनी ओर तेरी आड़ है। न तो दिन को धूप से, और न रात को चांदनी से तेरी कुछ हानि होगी। यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; यह तेरे प्राण की रक्षा करेगा। यहोवा तेरे आने जाने में तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा (भजन संहिता 121:1-8)।

किसी ने कहा है, ''जब नज़ारा बहुत बुरा लगे तो ऊपर देखने की कोशिश करें।'' ''हे प्रभु, ऐसे सकारात्मक व्यवहार के लिए हमारी आंखें खोल!''[48]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

13 और 14 अध्यायों की तुलना करने पर आपको कई अन्तर मिलेंगे: समुद्र से और पृथ्वी से निकले दो पशु; मेमना पहाड़ की चोटी पर था। लोगों को छद्म मेमने द्वारा भरमाया गया था; 1,44,000 लोग असली मेमने के पीछे चले थे। लोगों की भीड़ के माथों पर एक चिह्न था; उद्धार पाए हुओं के माथों पर नाम था। लोग शोर मचा रहे थे, ''उस पशु के समान कौन है?''; छुटकारा पाए हुए लोग एक नया गीत गा रहे थे। ये अन्तर पूरे पाठ में मिलते हैं; अगले दो पाठों में आपको और अन्तर मिल जाएंगे। उदाहरण के लिए पशु के पीछे चलने वाले लग रहे थे कि वे सुरक्षित हैं, परन्तु जो *सचमुच* सुरक्षित थे वे मेमने के पीछे चलने वाले ही थे। आपको चाहिए कि इन भिन्नताओं को दर्शाता एक चार्ट बनाएं।

''एक नया गीत,'' ''शेष कहानी,'' या ''तस्वीर का दूसरा पहलू'' जैसे और शीर्षक इस पाठ को दिए जा सकते हैं। डब्ल्यू. बी. वेस्ट ने ''मेज़ बदल गए हैं'' शीर्षक इस्तेमाल किया है। रूबल शैली ने इस भाग को ''विजयी मेमना'' नाम दिया। ''जयवन्त से बढ़कर'' (रोमियों 8:37; KJV) भी सही रहेगा। एल्बर्ट बाल्डिंगर ने शब्दों का खेल इस्तेमाल

किया: ''एक पुराना गीत'' (अन्य शब्दों में, पुराना परन्तु सदा नया गीत)। 1,44,000 को परमेश्वर का नाम मिला है, जिस कारण विलियम बार्कले ने उन्हें ''परमेश्वर के अपने'' कहा है। यदि आप वहां रहते हैं, जहां इस वाक्यांश का अर्थ है तो आप ''ताज़गी देने वाली रुकावट'' नाम दे सकते हैं।

चार्ल्स रायरी ने अध्याय 14 की पहली पांच आयतों को इस प्रकार विभाजित किया: परिस्थिति (आयत 1), गीत (आयतें 2, 3), दूरी (आयत 4क, ख), उद्धार (आयत 4ग), पवित्रीकरण (आयत 5)। मायर पर्लमैन ने यह कहते हुए कि छुड़ाए हुए लोग सुरक्षित, गा रहे, और पवित्र किए गए हैं, ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया।

तीनों भागों को तीन मुख्य प्वाइंट बनाते हुए, अध्याय 14 का इकट्ठा अध्ययन किया जा सकता है। वारेन वियर्सबे ने ''विजय के स्वर'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया। ''स्वरों'' के विचार का इस्तेमाल करते हुए आप ''स्तुति के स्वर'' (आयतें 1-5), ''चेतावनी के स्वर'' (आयतें 6-13) और ''न्याय के स्वर'' (आयतें 14-20) की बात कर सकते हैं।

इस अध्याय का अध्ययन सात भागों में भी हो सकता है: (1) आयतें 1-5; (2) आयतें 6, 7; (3) आयत 8; (4) आयतें 9-11; (5) आयतें 12, 13; (6) आयतें 14-16; (7) आयतें 17-20. फ्रैंक पैक ने इन भागों को ''मनुष्य के पुत्र के सात दर्शन'' कहा।

टिप्पणियां

[1]KJV, RSV तथा कई अन्य अनुवादों में ''सीरिया'' है (2 राजा 6:11)। सीरिया या अराम पलश्तीन के उत्तर में था। [2]कई लोग अध्याय 14 को सात भागों में बांटते हैं। इस पाठ के अन्त में ''सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स'' देखें। [3]मूल शास्त्र में 1, 6 और 14 आयतें उन्हीं दो यूनानी शब्दों से आरम्भ होती हैं, जिसका अर्थ ''और मैंने देखा'' है। NASB में 1 और 14 आयतों में ''I looked'' है परन्तु आयत 6 में ''I saw'' है। [4]इस पुस्तक में ''बीच हवा में पुलपिट'' और ''कटनी का समय!'' पाठ देखें। [5]''अजगर जैसे श्रद्धालु'' का सजीव वाक्यांश वहां इस्तेमाल किया जा सकता है, जहां लोगों को इसकी समझ हो (जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* [लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976], 214)। [6]1 और 14 आयतों में ''और देखो'' शब्दों में अगले दर्शन की चौंकाने वाली बात पर ज़ोर दिया गया है। [7]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''तूफ़ान के बीच की शांति'' पाठ देखें। [8]''1,44,000'' के सांकेतिक अर्थ के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''यहां अजगर होंगे!'' और ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''तूफ़ान के बीच की शांति'' पाठ देखें। [9]देखें 2 शमूएल 5:6-10; 1 राजा 8:1; 1 इतिहास 11:5. अन्ततः ''सिय्योन'' और ''यरूशलेम'' का इस्तेमाल समानार्थक शब्दों में होने लगा। (2 राजा 19:21, 31; यशायाह 2:3)। ''सिय्योन, दाऊद का नगर'' था (1 राजा 8:1; 2 इतिहास 5:2)। [10]यह समझने के लिए कि यहूदियों के मन में सिय्योन क्या था, किसी अनुक्रमणिका (कंकॉर्डेंस) में ''सिय्योन'' शब्द देखें। विशेषकर भजन संहिता तथा भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में इस शब्द के इस्तेमाल का अध्ययन करें। उदाहरण के लिए, पढ़ें भजन संहिता 9:11; 48:2, 3; 76:2; 87:2; 125:1; 132:13.

[11]नबियों द्वारा ''सिय्योन'' के अन्य इस्तेमालों के लिए देखें यशायाह 2:2-4; 40:9; योएल 2:32; मीका 4:2; जकर्याह 8:1-3. [12]वचन में यहां परमेश्वर के राज्य की बात है, जिसका स्वर्गीय पहलू भी है और

सांसारिक पहलू भी: सांसारिक पहलू कलीसिया है; स्वर्गीय पहलू वह है जिसका हम आमतौर पर स्वर्ग के रूप में विचार करते हैं। इन आयतों के अन्तिम भाग में उस राज्य के लोग होने का विवरण दिया गया है, जिसमें स्वर्गदूत और मनुष्य दोनों हैं। कुछ लोग अभी भी पृथ्वी पर थे और कुछ पहले ही मर चुके थे। [13]माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 132. कई प्रीमिलेनियल (हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले) लेखक सिय्योन को ''हज़ार वर्ष के शासन का सांसारिक स्थल'' समझते हैं, ''... परन्तु पूरा दृश्य स्वर्ग के सिंहासन के सामने महिमा का है'' (राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977], 267)। [14]कुछ टीकाकार सिय्योन पर्वत के दृश्य को प्रकाशितवाक्य में आगे दिखाए गए ''युद्ध'' की तैयारी के लिए ''प्रभु द्वारा अपनी सेना को इकट्ठा करना'' बताते हैं। [15]कई टीकाकार 1,44,000 को कलीसिया में से चुना हुआ ''समूह'' बना देते हैं। कई इस बात पर जोर देते हैं कि ये सभी लोग शहीद थे। परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि परमेश्वर द्वारा अपने अन्य विश्वासी बालकों से बढ़कर शहीदों को अधिक माना गया हो। यह कहना गलत नहीं होगा कि 1,44,000 लोग अपने विश्वास की खातिर मरने को *तैयार* थे, चाहे उन्हें ऐसा करने के लिए कहा गया या नहीं। [16]अन्य तर्क दिए जा सकते हैं: ये लोग ''पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे'' (14:3); उन्हें ''जय पाने वालों'' का प्रतिफल मिला था; आदि। [17]1 कुरिन्थियों 15:54; 1 यूहन्ना 5:4 भी देखें। [18]''शब्द'' शब्द एकवचन है; परन्तु आयत 3 में वचन में ''वे'' है, सो स्पष्टतया ''शब्द'' एक गीत ही था। संयोगवश अनुवादित शब्द ''शब्द'' यूनानी के *phone* (''फोने'') से लिया गया है, जो ''शोर'' के लिए सामान्य शब्द है। (यह यूनानी शब्द अंग्रेज़ी के ''टेलीफोन'' और ''माइक्रोफोन'' जैसे शब्दों से मिलता-जुलता है।) [19]प्रकाशितवाक्य में वीणाओं के संकेत पर टिप्पणियों के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''मेमना योग्य है'' पाठ देखें। [20]अध्याय 4 का अध्ययन करते हुए हमने संकेत दिया था कि वे प्राचीन विजय पाने वाले मसीहियों के प्रतिनिधि हो सकते हैं। यह व्याख्या अध्याय 14 वाली समस्या को भी दिखाती है, क्योंकि हम सुझाव दे रहे हैं कि 1,44,000 लोग विजयी मसीहियों के प्रतिनिधि हैं। इस दृष्टिकोण पर विचार करें: ''परन्तु क्या 24 प्राचीन कलीसिया के प्रतिनिधि होकर, 1,44,000 से पहले जोकि कलीसिया है, गा सकते हैं ? बेशक। हर रूपक का अपना संदेश है। क्या कलीसिया स्त्री और नगर दोनों हो सकती है ? विवाहित पत्नी और 'मंगेतर' लड़की ?'' (मैक्गुइगन, 217)। अध्याय 12 का अध्ययन करते हुए हमने ध्यान दिया था कि अध्याय के अन्त में कलीसिया को स्त्री और उसकी संतान के रूप में दिखाया गया है। इसलिए सम्भव है कि प्राचीन और 1,44,000 (जैसा मैक्गुइगन ने सुझाया) एक ही चीज़ को दो तरह से देखना है।

[21]संक्षेप में पहाड़ का दृश्य और सिंहासन का दृश्य कैसे मिलाया जाए, बताया नहीं गया। मेरा अनुमान है कि सिय्योन पहाड़ स्वर्ग की बात करने का जहां परमेश्वर का सिंहासन है, एक और ढंग है। परन्तु कुछ लोग सिंहासन की ओर ऊपर को देखते हुए पहाड़ पर 1,44,000 की तस्वीर बनाते हैं। [22]कइयों का मानना है कि ''शब्द'' स्वर्गदूतों का था और स्वर्गदतों ने 1,44,000 को ''नया गीत'' सिखाया। वही थे जिन्होंने सबसे पहले विजय का अनुभव किया। [23]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''मेमना योग्य है'' पाठ में ''नया गीत'' पर टिप्पणियां देखें। [24]1,44,000 द्वारा गाए जाने वाले ''नया गीत'' पर एक और संकेत के लिए, अगले अध्याय अर्थात 15:2-4 में विजय का गीत देखें। [25]डेनियल रस्सल, *प्रीचिंग द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: द अबिंग्डन प्रैस, 1935), 185. [26]मायर पर्लमैन, *विंडोज़ इन टू द फ़्यूचर: डिवोशनल स्टडीज़ इन द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (स्प्रिंगफील्ड, मिज़ोरी: गॉस्पल पब्लिशिंग हाउस, 1941), 127. इससे जुड़ी चर्चा के लिए, *ट्रुथ फॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पृष्ठ 158 पर ''एक नया नाम ... जिसे उसे पाने वाले के सिवाय कोई न जानेगा'' (2:17) पर नोट्स देखें। [27]''पृथ्वी पर से मोल लिए गए'' अभिव्यक्ति का संकेत है कि वे अब पृथ्वी पर नहीं थे, या इसका अर्थ यह हो सकता है कि मसीह के लहू ने उन्हें संसार से अलग कर दिया था (यूहन्ना 17:16)। [28]पर्लमैन, 127. [29]यहोवा विटनस वाले सिखाते हैं कि ''1,44,000'' का अर्थ यही लिया जाना चाहिए। मुझे यह भी बताया गया है कि आरम्भ में सैंवथ डे एडवेंटिस्ट लोग भी यही सिखाते थे कि स्वर्ग में 1,44,000 ही जाएंगे, परन्तु जब उनके अपने संगठन की संख्याा बढ़ गई, तो उन्होंने इस शिक्षा को छोड़

दिया। [30]इनमें से सभी लोग कैथोलिक टीकाकार नहीं थे; कुछ प्रोटेस्टेंट भी थे। कुछ ''उदारवादी'' प्रोटेस्टेंट टीकाकारों का विचार था कि यूहन्ना इस विचार को मानने में पागल था, परन्तु वे इस बात पर जोर देते थे कि वह इन आयतों में कुंआरेपन पर जोर दे रहा था।

[31]पौलुस द्वारा इसकी भविष्यवाणी की गई थी (1 तीमुथियुस 4:3) जो मठ्ठों तथा कॉन्वेंटों की स्थापना से पूरी हुई। [32]पौलुस ने एक बार लिखा भी था कि ''आजकल क्लेश के कारण, मनुष्य जैसा है वैसा ही रहे'' (1 कुरिन्थियों 7:26) अर्थात अविवाहित रहे (देखें 1 कुरिन्थियों 7:1)। परन्तु यह विशेष परिस्थिति के लिए विशेष परामर्श था, न कि विवाह की निन्दा। [33]कलीसिया के आरम्भिक अगुवे अर्थात प्रेरित विवाहित थे (मरकुस 1:30; 1 कुरिन्थियों 9:5)। [34]मैं अपनी बात को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहना चाहता। अविवाहित होना विवाहित होने से पवित्र नहीं है, परन्तु विवाहित होना भी अविवाहित होने से पवित्र नहीं है। अविवाहित लोग प्रभु की सेवा निराले ढंग से कर सकते हैं। (देखें मत्ती 19:10-12.) [35]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''अपने शत्रु को जानें'' पाठ में गर्भवती स्त्री पर टिप्पणियां देखें। [36]इफिसियों 5:25-27 भी देखें। रोमियों 7:4 मसीही लोगों से मसीह से ब्याहे होने की बात करता है। [37]NASB में ''अनैतिकता'' है, परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र में *porneia* है, जो ''fornication'' (देखें KJV) के लिए शब्द है। प्रकाशितवाक्य में अन्य पदों के लिए जो मूर्तिपूजा को अनैतिकता कहते हैं, देखें 17:2, 4; 18:3, 9; 19:2. [38]जो यह मानते हैं कि 14:1-5 प्रभु की सेना को दर्शाता है वे ध्यान दिलाते हैं कि पुराने नियम में सिपाहियों को युद्ध से पहले स्त्री से दूर रहना आवश्यक होता था। (देखें व्यवस्थाविवरण 23:9, 10.) उनका मानना है कि यह यहां इस्तेमाल किए गए रूपक की पृष्ठभूमि है। [39]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 161 पर टिप्पणी 30 देखें। [40]देखें मरकुस 2:14; 10:21; लूका 9:59; यूहन्ना 1:43; 21:19-22.

[41]डेविड एफ. बर्गेस, संकलन, *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशंस* (सेंट लुईस, मिज़ोरी: कनकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 80. यहां इस्तेमाल किया गया सही-सही वाक्य ''मैं *सूत* हूं'': कई देशों में ''धागा'' के लिए सूत शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। आपके सुनने वाले जिस भी शब्द से परिचित हों, उसी का इस्तेमाल करें। [42]मैंने विजय के मंच की अवधारणा को बढ़ाया नहीं है क्योंकि पूरे संसार में इसे समझना कठिन हो सकता है। परन्तु यदि आपके सुनने वाले इस रूपक से परिचित हैं तो आपको चाहिए कि अपने देश की राष्ट्रीय धुन बजने के बीच गले में सोने का ओलंपिक मैडल डाले विजय के मंच पर खड़े विजयी धावक की तुलना 14:1-5 वाले धावक से करें। [43]कई लोग ''पहली उपज का पहला फल'' वाक्यांश को इस प्रमाण के रूप में देखते हैं कि 1,44,000 सभी मसीहियों को नहीं कहा गया, बल्कि कलीसिया की आरम्भिक शताब्दियों में रहने और मरने वालों के लिए है, जो मरने तक वफ़ादार रहने वाले कई लोगों में सबसे पहले थे। यह व्याख्या सही हो सकती है, क्योंकि ''पहली उपज का पहला फल'' वाक्यांश का अर्थ यह हो सकता है। (देखें रोमियों 16:5; KJV; 1 कुरिन्थियों 15:23; 16:15.) परन्तु एक लेखक ने ध्यान दिलाया कि ''अनुवादित यूनानी शब्द 'पहली उपज का पहला फल' का अर्थ होने के बावजूद मूल में इसका अर्थ का सांसारिक इस्तेमाल के लिए छोड़ी गई उपज परमेश्वर को भेंट करने का संकेत था, परन्तु LXX [सप्तति अर्थात पुराने नियम का यूनानी अनुवाद] में यह भेंट या उपहार तक सीमित रह गया था।'' (माउंस, 271)। [44]प्रकाशितवाक्य 14:5 में अनुवादित शब्द ''निर्दोष'' 1 पतरस 1:19 में ''निष्कलंक'' है। [45]21:27 भी देखें। [46]मैक्गुइगन, 217. [47]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''वस्तुओं को ध्यान में रखना'' में पहला मुख्य प्वाईंट देखें। [48]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो इस बात पर ज़ोर दें कि सहायता तथा संरक्षण के लिए प्रभु पर भरोसा रखने से पहले उसके साथ सम्बन्ध सही होना आवश्यक है। आप चाहें तो *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''तूफ़ान के बीच की शांति'' से 1,44,000 पर कुछ बातों की समीक्षा कर सकते हैं। इस बात पर ज़ोर दें कि यदि कोई कलीसिया का विश्वासी सदस्य है तो वह उन 1,44,000 में से एक है। पाठ को समाप्त करने के अन्य विचारों के लिए इस पुस्तक में ''देखो, सुनो और समझो'' पाठ में टिप्पणी 50 देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. 2 राजा 6 से एलीशा के टहलुए की कहानी की समीक्षा करें। क्या हमें कभी ''अपनी आंखें खोलने'' की आवश्यकता पड़ती है ?
2. अध्याय 14 वाला मेमना कौन है ?
3. 1,44,000 कौन हैं ?
4. इस तथ्य का क्या महत्व है कि 1,44,000 के माथे पर मेमने का नाम और परमेश्वर का नाम है।
5. सिय्योन पहाड़ का संक्षिप्त इतिहास देते हुए बताएं कि यह किसका प्रतीक बन गया। क्या अध्याय 14 वाला सिय्योन पहाड़ ग्लोब पर मिलने वाला स्थान है या एक आत्मिक अवधारणा ?
6. 1,44,000 लोग सिय्योन पहाड़ पर क्या कर रहे थे ? क्या परमेश्वर की महिमा गाने का कोई महत्व है ? यदि हां, तो क्या ?
7. उनका गीत किस अर्थ में ''*नया* गीत'' था ?
8. 1,44,000 के अलावा कोई और क्यों गीत नहीं सीख सका ?
9. क्या आयत 4 का पहला भाग यह सिखाता है कि कुंआरा होना विवाहित होने से अधिक पवित्र है ?
10. यीशु के पीछे सचमुच चलने में क्या शामिल है ?
11. ''पहले फल'' वाक्यांश के मूल अर्थ की व्याख्या करें। इस शब्द का अर्थ क्या हो गया ?
12. किस अर्थ में परमेश्वर का कोई बालक ''निष्कलंक'' हो सकता है ?
13. हर हाल में वफ़ादार होने के महत्व पर चर्चा करें। हर हाल में वफ़ादार होने के महत्व पर चर्चा करें।

सिय्योन पर्वत पर 1,44,000 के साथ खड़ा मेमना (14:1)